ISSN: 3107-6475(P), Volume 1, Issue 2 (December, 2025), 59-65.

जनपद मुजफ्फरनगर के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन

बबीता तोमर*

सारांश (Abstract)

विद्यालयों में विद्यार्थियों की लगातार अनुपस्थिति एक गंभीर समस्या है। विद्यार्थियों की अनुपस्थिति एक ऐसी समस्या है जिसका सामना सम्पूर्ण स्कूली शिक्षा प्रणाली कर रही है। विद्यार्थियों की अनुपस्थिति न केवल शिक्षकों के लिए चिंता का विषय है, बल्कि यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सभी नागरिकों को भी प्रभावित करती है। विद्यार्थियों की लगातार अनुपस्थिति के कारण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है, प्रस्तुत शोध पत्र उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के कारणों का पता लगाने का प्रयास हैं शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं । जिसमे न्यादर्श के रूप मे 30 प्रधानाध्यापक, 215 अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थी तथा अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के 136 अभिभावक शामिल किए गए। आकड़ों का संकलन स्वनिर्मित उपकरणों, 1.विद्यार्थी अनुपस्थिति कारक संबंधित प्रश्नावली (प्रधानाध्यापकों के लिए), 2.अभिभावक साक्षात्कार अनुसूची, 3.विद्यार्थी साक्षात्कार अनुसूची)। आकड़ों के विश्लेषण के लिए विषय वस्तु- विश्लेषण, आवर्ती तथा प्रतिशत का उपयोग किया गया | वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के लिए विद्यालय के अध्यापकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थी संबंधी विभिन्न कारक पाए गए ।

मुख्यशब्द (Keywords)

उच्च प्राथमिक विद्यालयों, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, अनुपस्थिति।

प्रस्तावना (Introduction):

किसी भी देश का निर्माण उसकी मानव शक्ति के विकास पर निर्भर करता है और राष्ट्र के विकास का मुख्य आधार उस देश की शिक्षा प्रणाली होती है। शिक्षा के माध्यम से, प्रत्येक पीढ़ी अपने ज्ञान, कौशल, अनुभव, आदर्श, परंपरा, संस्कृति और जीवन शैली के आयाम को विकसित करती है। प्रारंभिक शिक्षा बच्चे के भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो उसे एक सक्षम और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत है और नई शिक्षा नीति (2020) बच्चों के लिए एक मजबूत शैक्षिक आधार प्रदान करती है, सभी बच्चों के लिए समावेशी, सुलभ और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए के लिए भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ये सभी पहल और कार्यक्रम लागू किए जा रहे हैं। जिससे हम प्राथमिक शिक्षा के सर्वभौमिकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त कर सके , लेकिन इन सभी कार्यक्रमों की सार्थकता तभी संभव है जब सभी विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित हों एवं सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनें। लेकिन आज भी प्राथमिक शिक्षा के वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें से एक महत्वपूर्ण चुनौती परिषदीय विद्यालयों में विद्यार्थियों का लगातार अनुपस्थित रहना है। सरकार द्वारा स्कूली विद्यार्थियों की भागीदारी और सक्रिय शिक्षण-अध्यापन को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन अभी भी सभी विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय नहीं आते हैं। विद्यार्थियों की लगातार अनुपस्थिति शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बाधित करती है और पूरी कक्षा के समग्र विकास को प्रभावित करती है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व (Need and Importance of the Study):

प्रारंभिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस स्तर पर बालक की औपचारिक विद्यालय शिक्षा प्रारंभ होती है। प्राथमिक शिक्षा की बालक के जीवन में कुछ विशिष्ट भूमिकाएँ होती हैं, जैसे उन्हें पढ़ना, लिखना, गणित और रचनात्मकता सिखाना। इसके साथ ही यह चरित्र निर्माण, आलोचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय, संचार और समाजीकरण कौशल, व्यवहारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और संज्ञानात्मक सीखने की क्षमताएँ विकसित करने में भी सहायक होती है। यह शिक्षा बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रारंभिक शिक्षा को प्राथमिकता देना कई कारणों से महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्राथमिक शिक्षा के द्वारा समाज में सामाजिक समानता व लोकतंत्र को स्थापित करना, योग्यता को विकसित करना और इसके अलावा राष्ट्रीय उत्पादन मे वृद्धि करना आदि विभिन्न कार्य किए जाते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा के इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यालयों मे विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है। विद्यालय मे नियमित रूप से उपस्थित रहकर ही बालक इन सभी उद्देश्यों और विभिन्न शैक्षिक लाभ को प्राप्त कर

*प्रवक्ता- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुज़फ्फरनगर ।

How to cite this article:

Tomar, B. (2025). जनपद मुजफ्फरनगर के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन. *DIET - Multidisciplinary Research Journal (DIET-MRJ), 1*(2), 59-65.

सकता है,सरकार सभी बालकों के लिए अनिवार्य व निशुल्क शिक्षा द्वारा शिक्षा के सर्वभौमिकीकरण हेतु प्रयासरत है, लेकिन फिर भी कई देश में विद्यार्थियों के लिए अनुपस्थिति एक विकट समस्या बनी हुई है। विद्यार्थी अनुपस्थिति को ख़त्म करने के लिए विभिन्न नीतियों, प्रयासों को और सही ढंग से मापना होगा। जिससे हम विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारणों और चुनौतियों के बारे में जान सके, क्योंकि कारणों को जानकर ही हम विद्यार्थी अनुपस्थिति की समस्या का समाधान कर सकते है।विद्यालयों में अनुपस्थिति एक वैश्विक मुद्दा है, लेकिन इसका अध्ययन मुख्य रूप से कुछ भौगोलिक क्षेत्रों तक ही सीमित है। दुनिया भर में तीन-चौथाई से भी कम बालक निम्न माध्यमिक शिक्षा पूरी करते हैं (यूनेस्को, 2019)।शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के कार्यान्वयन को एक दशक से अधिक समय हो चुका है, फिर भी प्राथमिक शिक्षा में वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हैं। सभी हितधारक इस चुनौतीपूर्ण स्थिति पर विचार कर रहे हैं और निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त न कर पाने के कारणों का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं, कि क्या कारण है जो विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के बावजूद प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है । कई शोध अध्ययनों ने साबित किया है कि विद्यार्थियों की अनुपस्थिति विद्यालय की विफलता का एक महत्वपूर्ण कारण है। हालाँकि विद्यार्थी का बीच मे स्कूल छोड़ने पर बहुत सारे शोध प्रकाशित हो चुके हैं, "विद्यार्थी अनुपस्थिति" का विषय अपेक्षाकृत कम समझा गया है। इसलिए, इस समस्या को शोधकर्ता द्वारा चुना गया है ताकि वह परिषदीय विद्यालयों में विद्यार्थियों की लगातार अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन कर सके। अतः सीखने के वांछित परिणामों को प्राप्त करने के लिए, हमें विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारणों को जानने के लिए इस शोध अध्ययन की आवश्यकता है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य जनपद मुजफ्फरनगर के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारणों का पता लगाना हैं। जिससे कि परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों क़ी अनुपस्थिति की समस्या के समाधान में योगदान किया जा सके।

प्रस्तुत शोध शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षकों के लिए विद्यार्थियों में समय की पाबंदी, नियमितता और अनुशासन विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा । वर्तमान अध्ययन से न केवल विद्यार्थियों, शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों को बल्कि मार्गदर्शन सलाहकारो, और शैक्षिक योजनाकारों को भी समर्थन मिलने की उम्मीद है।

समस्या कथन (Research Problem):

"जनपद मुजफ्फरनगर के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives):

- परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के कारणों का पता लगाना।
- परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थित वृद्धि हेतु प्रधानाध्यापकों से सुझाव प्राप्त करना।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषिकरण (Operational Definitions of Terms):

परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय

परिषदीय विद्यालयों का संचालन बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा किया जाता है। ये विद्यालय कक्षा छः से आठ तक अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

विद्यार्थी

इस अध्ययन में, "विद्यार्थी" से तात्पर्य विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थी का विद्यालय में अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थी से है।

अनुपस्थिति

किसी वैध कारण के बिना स्कूल न जाने की आदत को शिक्षा में अनुपस्थिति के रूप में जाना जाता है। विद्यालय जाने से इनकार करना और विद्यालय समय समाप्ति से पहले चले जाना अनुपस्थिति के उदाहरण हैं|

शोध विधि (Methoddology):

इस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अनुसंधान की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या (Populaiton):

प्रस्तुत इस शोध में जनसंख्या से तात्पर्य जनपद मुजफ्फरनगर के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित सभी विद्यार्थियों से है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि (Sampling Methods):

इस अध्ययन को जनपद मुज़फ़्फ़रनगर के परिषदीय विद्यालयों के कक्षा VI-VIII के विद्यार्थियों पर किया गया। इन विद्यार्थियों की उम्र 11 से 14 वर्ष के बीच थी। पहले चरण में, जनपद मुजफ्फरनगर के सभी ब्लॉकों से 30 विद्यालयों को यादृच्छिक रूप से चुना गया। दूसरे चरण में उच्च प्राथमिक कक्षाओं के सभी विद्यार्थियों के लिए स्कूल में उपलब्ध तीन महीने के उपस्थिति रिकॉर्ड की जांच की गई और जिनकी उपस्थिति कुल स्कूल दिनों में से 50% से कम थी, उन्हें अनुपस्थित विद्यार्थी के रूप में पहचाना गया।

इस प्रकार जनपद मुजफ्फरनगर के 30 परिषदीय विद्यालयों को अध्ययन के लिए चुना गया और इन सभी विद्यालयों के 30 प्रधानाध्यापक व 215 विद्यार्थी जिनकी उपस्थिति औसतन 50% से कम थी न्यादर्श के रूप में चुने गए और चुने हुए विद्यार्थियों के 136 अभिभावकों को अभिभावक न्यादर्श के रूप में चुना गया।

सारणी 1: न्यादर्श प्रारूप का विवरण

न्यादर्श का प्रारूप		
प्रधानाध्यापक	अभिभावक	विद्यार्थी
30	136	215

ISSN: 3107-6475(P), Volume 1, Issue 2 (December, 2025), 59-65.

अनुसंधान के उपकरण (Tools):

1. विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारण संबंधित प्रश्नावली (प्रधानाध्यापकों के लिए)|
2. अभिभावक साक्षात्कार अनुसूची |
3. विद्यार्थी साक्षात्कार अनुसूची |

सांख्यिकीय प्रविधियां (Statistical Methods):

शोधकर्ता द्वारा इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता आवर्ती, प्रतिशत, गणना द्वारा सांख्यिकी विश्लेषण करने के बाद प्रदत्तो का सारणीयन, ग्राफीय चित्रण और व्याख्या की गई है ।

निष्कर्ष (Conclusion):

सारिणी 2 : प्रधानाध्यापकों के अनुसार विद्यार्थी अनुपस्थिति के मुख्य कारण

क्रस0	कारण	आवृति	प्रतिशत
1	विद्यार्थियों का माता-पिता के साथ कार्य में मदद	07	23.33%
2	अभिभावकों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना	05	16.66%
3	विद्यार्थियों का रिश्तेदारी में चले जाना	06	20.00%
4	विद्यार्थियों के माता-पिता का अशिक्षित होना	03	10.00%
5	विद्यार्थियों का माता-पिता के साथ अस्थाई प्रवसन	03	10.00%
6	अभिभावकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होना	02	06.66%
7	विद्यार्थियों के घर में शैक्षिक वातावरण का अभाव होना	02	06.66%
8	विद्यार्थियों के अभिभावकों का पढ़ाई को बोझ समझना	02	06.66%
	कुल योग	30	100%

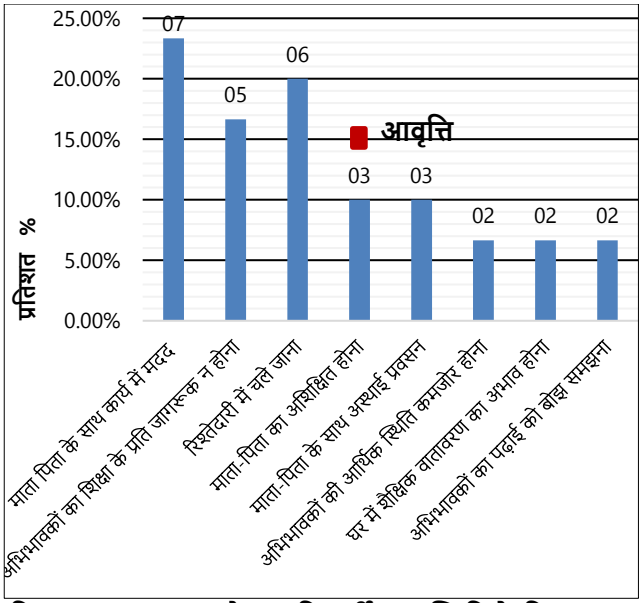

चित्र 1 :- प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थी अनुपस्थिति के लिए मुख्य कारण

सरिणी संख्या 2 व चित्र संख्या 1 के अनुसार 23.33% (07) विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यालयों में विद्यार्थी अनुपस्थति के कारणों में सबसे मुख्य कारण बालकों का अपने माता-पिता के साथ उनके घरेलू कार्य व कृषि कार्य/व्यवसाय मे मदद करना बताया गया ,20.00% (06)विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का रिश्तेदारी मे चले जाना, 16.66 (05) विद्यार्थियों के अभिभावकों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना ,10.00 %(03) विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के माता - पिता का अशिक्षित होना, 10.00% (03) विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का माता-पिता के साथ कुछ समय के लिए अस्थाई प्रवसन पर चले जाना, 06.66% (02) विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के माता – पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर होना, 06.66% (02) विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के घर मे शैक्षिक वातावरण का अभाव, 06.66% (02) विद्यालय प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के अभिभावकों का पढ़ाई को बोझ समझना आदि विभिन्न कारण विद्यालय प्रधानाध्यापको के अनुसार विद्यालयों में विद्यार्थी अनुपस्थति के जिम्मेदार कारक थे।

सारिणी 3: अभिभावकों के अनुसार विदयार्थी अनुपस्थिति के कारण

क्र. सं.	कारण	आवृति
1	विद्यार्थियों द्वारा अभिभावकों की घरेलू कार्यों में मदद करना ।	24
3	विद्यार्थियों द्वारा छोटे भाई बहनों की देखभाल करना।	16
5	विद्यार्थियों की शारीरिक व मानसिक बीमारी के कारण।	12
6	विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा शिक्षा को महत्व न देना।	12
7	विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन ना लगना ।	10
8	विद्यार्थियों को विद्यालय जाना पसंद नहीं।	09
9	विद्यार्थियों का रिश्तेदारी में चले जाना।	08
10	विद्यार्थियों का अपने माता पिता के साथ अस्थाई प्रवसन	06
12	विद्यालय दूर होने के कारण विद्यार्थियों का विद्यालय में अनुपस्थित रहना ।	02
	कुल योग	136

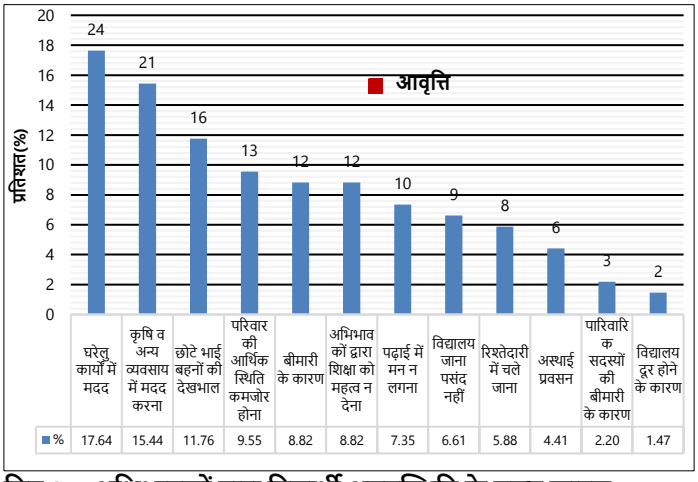

चित्र 2 :- अभिभावकों द्वारा विद्यार्थी अनुपस्थिति के मुख्य कारण

सारिणी संख्या 3 व चित्र संख्या 2 मे दर्शाया गया हैं कि 17.64% (24) अभिभावकों द्वारा विद्यार्थी अनुपस्थिति के मुख्य कारणों यह बताया गया कि विधार्थी अपने अभिभावकों के घरेलू कार्यों मे उनकी मदद करते हैं, 15.44% (21) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के मुख्य कारणों में यह बताया कि विधार्थी अपने अभिभावकों के कृषि व अन्य व्यवसाय में उनकी मदद करते हैं, 11.76% (16)अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारणों में यह बताया कि विद्यार्थियों का अपने अपने छोटे भाई बहनों की देखभाल करना, 9.55% (13)अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विद्यार्थियों के परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होना बताया, 8.82% (12) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति

DIET - Multidisciplinary Research Journal (DIET-MRJ)
ISSN: 3107-6475(P), Volume 1, Issue 2 (December, 2025), 59-65.

का कारण विधार्थी का शारीरिक व मानसिक रूप से अस्वस्थ होना बताया, 8.82% (12) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के मुख्य कारणों में यह बताया कि विद्यार्थी अभभावकों का शिक्षा को महत्व ना देना, 7.35% (10) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारणों में बताया कि विद्यार्थी का पढ़ाई मे मन ही नहीं लगता, 6.61% (09) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण यह बताया विद्यार्थियों को विद्यालय जाना ही पसंद नहीं, 5.88% (08) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विद्यार्थियों का अपनी रिश्तेदारी मे चले जाना बताया ,04.41%(06) अभिभावकों के अनुसार विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विधार्थी अपने माता पिता के साथ कुछ समय के लिए अस्थायी प्रवसन कर लेना, 2.20% (03) अभिभावकों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विद्यार्थी के परिवार के सदस्यों की बीमार रहना बताया, 1.47% (02) अभिभावकों ने बताया कि विद्यालय दूर होने के कारण विद्यार्थी विद्यालय मे अनुपस्थित रहते हैं। इस प्रकार अनुपस्थित विद्यार्थियों के अभिभावकों से हुए साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के पश्चात विद्यार्थी अनुपस्थिति के विभिन्न कारण पाए गए ।

सारिणी 4: प्रतिदिन विद्यालय न आने पर विद्यार्थियों द्वारा बताए गए कारण

क्र सं0	कारण	आवृति	प्रतिशत (%)
1	विद्यार्थियों द्वारा घरेलू कार्य में मदद के कारण	44	20.46%
2	विद्यार्थियों द्वारा कृषि कार्य व अन्य व्यवसाय मदद	33	15.34%
3	विद्यार्थियों कें अभिभावकों का शिक्षा में अरुचि होना	24	11.16%
4	विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन न लगना	21	09.76%
5	विद्यार्थियों द्वारा छोटे भाई बहन की देखभाल करना	19	08.83%
6	विद्यार्थियों का रिश्तेदारी में चले जाना	18	08.37%
7	विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति कमजोर होना	13	06.04%
8	विद्यार्थियों के परिवार के सदस्यों का बीमार रहना	11	05.11%
9	विद्यार्थियों कों विद्यालय जाना पसंद नहीं	10	04.65%
10	विद्यार्थियों के बीमार रहने के कारण	08	03.72%
11	विद्यार्थियों का माता-पिता के साथ अस्थाई प्रवसन	08	03.72%
12	विद्यालय दूर होने के कारण	06	02.79%
	कुल योग	215	100%

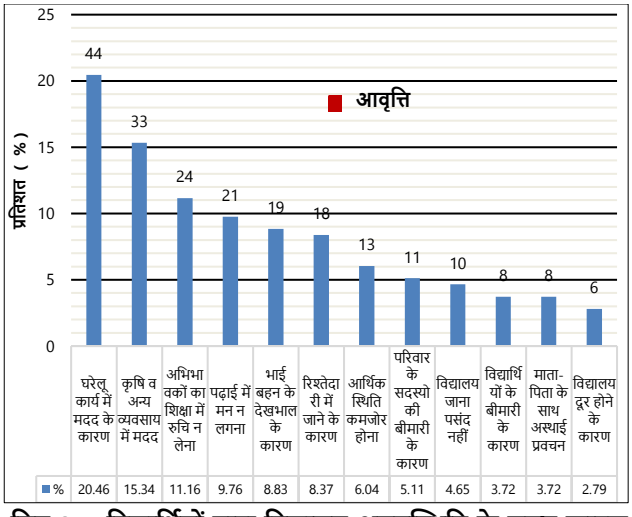

चित्र 3 :- विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय अनुपस्थिति के मुख्य कारण

सारिणी संख्या 4 व चित्र संख्या 3 मे दर्शाया गया हैं कि 20.46% (44) विद्यार्थियों द्वारा विद्यार्थी अनुपस्थिति का मुख्य कारण यह बताया गया कि विद्यार्थी अपने अभिभावकों के घरेलू कार्यों मे उनकी मदद करते हैं, 15.34% (33) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के मुख्य कारण में यह बताया कि विद्यार्थी अपने अभिभावकों के कृषि व अन्य व्यवसाय में उनकी मदद करते हैं, 11.16% (24) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारण में यह बताया कि अभिभावक शिक्षा में रूचि नहीं लेते हैं, 9.76% (21) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन ना लगना बताया, 8.83% (19) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण भाई बहन की देखभाल करना बताया, 8.37%(18) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का मुख्य कारण रिश्तेदारी में चले जाना बताया, 06.04 %(13) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के कारण विद्यार्थी के घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होना बताया, 05.11 %(11) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण परिवार के सदस्यों की बीमारी बताया, 04.65% (10) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विद्यार्थियों का विद्यालय जाना पसंद नहीं बताया, 03.72%(08) विद्यार्थियों के अनुसार विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विधार्थी का शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहना है, 03.72% (08) विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अनुपस्थिति का कारण विद्यार्थी का अपने माता पिता के साथ अस्थाई प्रवसन पर चले जाना बताया, 02.79% (06) विद्यार्थियों ने बताया कि विद्यालय दूर होने के कारण विद्यार्थी विद्यालय मे अनुपस्थित रहते हैं। इस प्रकार अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों से हुए साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के पश्चात शोधकर्ता ने विद्यार्थी अनुपस्थिति के ये विभिन्न कारण पाए।

उद्देश्य 2: प्रधानाध्यापकों से विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु सुझाव प्राप्त करना ।

सारिणी 5: प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की

क्र. स.	सुझाव	आवृत्ति	प्रतिशत(%)
1	नियमित बैठक द्वारा अभिभावकों के शिक्षा के प्रति जागरूकता	07	23.20%
2	विद्यालयों में विषय वार अध्यापकों की नियुक्ति	05	16.70%
3	कमजोर विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की नियमित व्यवस्था	05	16.70%
4	एस एम सी के सदस्यों को विद्यार्थी उपस्थित में सहयोग हेतु प्रेरित करना	04	13.20%
5	कक्षा शिक्षण के दौरान नवाचार शिक्षण विधियां का नियमित उपयोग	03	10%
6	अभिभावको हेतु गांव में स्थानीय रोजगार की व्यवस्था	02	6.70%
7	परिषदीय विद्यालयों के प्रति समाज के विश्वास में वृद्धि करना	02	6.70%
8	परिषदीय विद्यालयों के प्रति समाज के विश्वास में वृद्धि करना	02	6.70%
	कुल योग	30	

उपस्थिति वृद्धि हेतु सुझाव

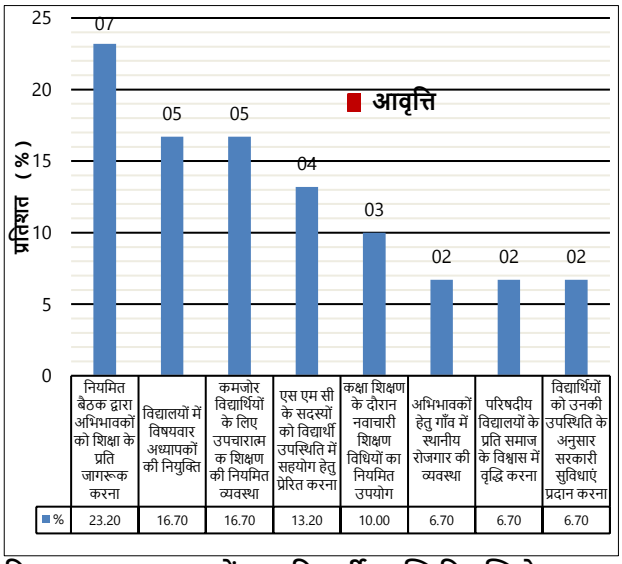

चित्र 4 :- प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थी उपस्थिति वृद्धि हेतु सुझाव

सारिणी संख्या 5 और चित्र संख्या 4 मे दर्शाया गया है कि 23.20% (07) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु नियमित बैठक द्वारा अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना, 16,70% (05) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु विद्यालयों में विषय वार अध्यापकों की नियुक्ति करना, 16.70% (05) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु कमजोर विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की नियमित व्यवस्था करना, 13.20 (04) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु एस.एम.सी. के सदस्यों को विद्यार्थी उपस्थित में सहयोग हेतु प्रेरित करना, 10%,(03) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु कक्षा शिक्षण के दौरान नवाचारी शिक्षण विधियों का नियमित उपयोग करना, 6.70%)(02) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु अभिभावको हेतु गांव में ही स्थानीय रोजगार की व्यवस्था करना, 6.70%(02) प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि हेतु परिषदीय विद्यालयों के प्रति समाज के विश्वास में वृद्धि करना, आदि सुझाव दिए गए|

विद्यालय एवं अध्यापकों संबंधी कारक:

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार विद्यालय अनुपस्थिति की समस्या के कुछ कारण विद्यालय एवं अध्यापकों से संबंधित हैं, जैसे कि नवाचारी शिक्षण विधियों का यदा कदा ही प्रयोग, विद्यार्थियों को विद्यालय लाने में एस.एम. सी. द्वारा अपेक्षित सहयोग का अभाव, छात्र-शिक्षक अनुपात अपर्याप्त, शैक्षिक समावेशन हेतु विशेष प्रविधियों के नियमित प्रयोग में कठिनाई, समय सारणी के अनुसार कक्षा शिक्षण में कठिनाई, शिक्षण के दौरान टी.एल.एम. के प्रयोग के प्रति उदासीनता, सभी विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान देने में कठिनाई, दीक्षा एप के प्रयोग मे कठिनाई, अध्यापकों एवं कुछ विद्यार्थियों के मध्य आत्मीय संबंधों का अभाव, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का नियमित आयोजन न होना, कुछ अभिभावकों का अध्यापकों के शिक्षण कार्य व व्यवहार से संतुष्ट ना होना, पढ़ाई में कमजोर बच्चों हेतु उपचारात्मक शिक्षण का नियमित आयोजन ना होना, विद्यालय का रास्ता दुर्गम होना।

घर एवं अभिभावकों सबंधी कारक:

इस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार विद्यालय अनुपस्थिति की समस्या के कुछ कारण विद्यार्थियों के घर एवं अभिभावकों से संबंधित हैं। इनमें विद्यार्थियों के घर में शैक्षिक वातावरण का अभाव, अभिभावकों की बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने के प्रति उदासीनता, माता-पिता दोनों का ही काम पर जाना, अभिभावकों की विद्यालय में होने वाली विभिन्न बैठकों में प्रतिभाग के प्रति उदासीनता, अभिभावकों मे शैक्षिक जागरूकता का अभाव, अभिभावकों का अपने बच्चों की शैक्षिक प्रगति को जानने की प्रति उदासीनता, बच्चों का घरेलू कार्यों में व्यस्त रखना, अभिभावकों का बच्चों की पढाई मे मदद करने में अक्षम रहना, अभिभावकों का शिक्षा चौपालों में प्रतिभाग करना अनावश्यक लगना, माता-पिता का अशिक्षित होना, छोटे भाई बहनों की देखभाल, अभिभावकों के साथ अस्थाई प्रवसन, परिवार के सदस्यों की बीमारी, परिवार की आर्थिक तंगी।

विद्यार्थी संबंधी कारक:

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि कई व्यक्तिगत कारण विद्यार्थियों की विद्यालय से अनुपस्थिति का कारण बनते हैं। इन कारणों में प्रमुख हैं – विद्यार्थियों का फसलों की कटाई/बुआई व शादियों मे संलग्न रहना, शैक्षिक प्रगति कक्षा के अनुरूप कम होना, शैक्षिक आकांक्षा का अभाव, विद्यालय में नियमित उपस्थिति हेतु अभिप्रेरणा का अभाव होना, गृह कार्य पूर्ण करने में कठिनाई, विद्यार्थियों के भाई बहनों का स्कूल छोड देना, विद्यार्थियों के साथियों का विद्यालय में कम आना, विद्यार्थियों का शारीरिक या मानसिक रोग से ग्रसित होना, विद्यार्थियों को विद्यालय में समायोजन करने में कठिनाई, विद्यार्थी की पढ़ाई में रुचि न होना, विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के अन्य प्रमुख कारण मौसमी प्रवासन, विवाह, सामाजिक गतिविधियों, स्थानीय त्योहारों में भाग लेना शामिल है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के लिए जिम्मेदार अन्य प्रमुख कारण विभिन्न सामाजिक गतिविधियों, विवाह, स्थानीय उत्सवों /मेलों में भाग लेना, मौसमी प्रवसन भी शामिल है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications):

पिछले अनुभाग में उल्लेखित कुछ निष्कर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं और ये शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए त्वरित कदम उठाने की आवश्यकता को दर्शाते हैं। राज्य सरकारों और केंद्र सरकार को शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, जिसके लिए कई कठोर निर्णय लेने की आवश्यकता हो सकती हैं। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए भौतिक बुनियादी ढांचे, शिक्षकों की गुणवत्ता, आदि में तत्काल सुधार की

आवश्यकता है। विद्यार्थियों की उपस्थिति में सुधार के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं।

सुझाव (Recommendations):

- सभी विद्यालयों को एक उपस्थिति कार्य योजना बनानी चाहिए और इसे प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के साथ साझा करना चाहिए। इस कार्य योजना में विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि एवं उपस्थिति बनाए रखने के लिए विभिन्न रणनीतियाँ शामिल होनी चाहिए। जैसे उपस्थिति रिकॉर्ड के लिए बायोमेट्रिक सिस्टम या डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करें अनुपस्थित छात्रों की पहचान के लिए Early Warning Systems लागू करें।
- सभी कक्षाओं के अनुरूप अध्यापक नियुक्त किए जाए अर्थात विद्यालय में छात्र-शिक्षक अनुपात पर्याप्त हो जिससे अध्यापकों द्वारा समय सारिणी के अनुसार नियमित शिक्षण और सभी विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सके ।
- शिक्षण की गुणवत्ता मे सुधार व विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं, रुचियों और अभिक्षमताओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा में नवाचारी शिक्षण विधियों एवं अंतःक्रियात्मक वातावरण व टी.एल.एम. के प्रयोग के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आसान, रुचिकर व आनंददायक बनाने हेतु अध्यापकों को आधुनिक, रुचिकर और प्रेरक शिक्षण तकनीकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
- एस.एम.सी.और समुदाय के सदस्यों को बच्चों की स्कूल में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने की बड़ी जिम्मेदारी दी जाए । अध्यापकों एवं सभी विद्यार्थियों के मध्य आत्मीय संबंध विकसित हो जाए जिससे विद्यार्थी निःसंकोच अपने मन की बात और अपनी समस्याओं को अपने अध्यापकों के सामने रख सके।
- विद्यालय में शैक्षणिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था करके उपचारात्मक शिक्षण का नियमित आयोजन किया जाए। विद्यार्थियों की अधिगम संप्राप्ति के प्रति अध्यापकों की जबाबदेही सुनिश्चित की जाए।
- विद्यालयों को सभी विद्यार्थियों के लिए अधिक आकर्षक बनाने के लिए विद्यालय मे सकारात्मक, सुरक्षित, प्रेरणादायक और समावेशी वातावरण बनाना जाए। दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष सुविधा एंव सामग्री उपलब्ध कराई जाए , दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समावेशन हेतु नियमित रूप से विशेष प्रविधियों के प्रयोग मे विशेष शिक्षकों की जबाबदेही सुनिश्चित की जाए ।
- सकारात्मक सुदृढीकरण के माध्यम से, नियमित रूप से अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार में बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए,और यदि अनुपस्थित विद्यार्थी विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहना आरंभ करते हैं, तो अध्यापकों को सबके सामने उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। नियमित उपस्थिति वाले छात्रों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र दें।
- विद्यालय सप्ताह में एक बार अनुपस्थित विद्यार्थियों की काउंसलिंग के लिए परामर्शदाता की सहायता ले सकते हैं। परामर्शदाता विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के वास्तविक कारणों की पहचान करके उनकी आवश्यकतानुसार समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। इसलिए, प्रत्येक विद्यालय पर या एक निश्चित क्षेत्र में एक परामर्श केंद्र हो सकता है। विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के व्यक्तिगत कारणों की पहचान करने के लिए परामर्श सत्र आयोजित किए जाए।
- शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करने के लिए समय-समय पर अतिथि वक्ताओं, जैसे इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक व समाज में पहचान बना चुके विभिन्न पेशों से जुड़े लोगों को आमंत्रित किया जाए और विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए नियमित रूप से शैक्षणिक भ्रमण ,परिभ्रमण, और क्षेत्र भ्रमण का आयोजन भी किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जिज्ञासा, रुचि और प्रेरणा पैदा करने, और शिक्षा के प्रति सकारात्मक एवं स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास के रूप में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम बहुत हद तक लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।
- विद्यालय के प्रधानाध्यापकों और अध्यापकों को हर हफ्ते या हर पंद्रह दिन में अभिभावक-शिक्षक बैठकें आयोजित करनी चाहिए और उन्हें शिक्षा और नियमित उपस्थिति के महत्व के बारे में जागरूक किया जाए जिससे वे अपने बच्चों को घरेलू काम या आय सृजन गतिविधियों में ज्यादा शामिल न करे। अनुपस्थित विद्यार्थियों के अभिभावकों से व्यक्तिगत संपर्क किया जाए। समुदाय को शिक्षा से संबंधित गतिविधियों में शामिल किया जाए।
- स्थानीय समुदायों और गैर- सामुदायिक स्तर पर शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाए। बाल श्रम, बाल विवाह जैसे मुद्दों को रोकने के लिए समुदाय और गैर-सरकारी संगठनों की मदद ली जाए। स्थानीय स्तर पर शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाए। सरकारी संगठनों के साथ मिलकर शिक्षा के लिए जागरूकता अभियान चलाएं जाए।
- अध्यापकों को विद्यार्थियों के पठन-पाठन को सुगम बनाने हेतु विभिन्न डिजिटल टूल्स और विभिन्न एप जैसे रीड अलोंग एप ,दीक्षा एप के प्रयोग का प्रशिक्षण व संसाधन प्रदान किया जाए जिससे अध्यापक के पठन - पाठन को सुगम व रुचिकर बना सके।
- अध्यापकों को विद्यार्थियों के प्रति अधिक मित्रवत होना चाहिए जिससे अध्यापकों एवं सभी विद्यार्थियों के मध्य आत्मीय संबंध विकसित हो जाए और विद्यार्थी निसंकोच अपने मन की बात और अपनी समस्याओं को अपने अध्यापकों के सामने रख सके।
- विद्यालय में नियमित रूप से पाठय-सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाए। विद्यालय में खेल के मैदान और खेल-कूद की सुविधा के साथ-साथ, वाद-विवाद,

विचार-विमर्श, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाए ताकि विद्यार्थियों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित की जा सके।

- विद्यालय मे नियमित रूप से उपस्थित रहने के लिए के लिए प्रोत्साहन के रूप में, नियमित विद्यार्थियों को किसी आकर्षक स्थान पर शैक्षिक भ्रमण का अवसर या उपहार प्रदान किया जा सकता है, ताकि अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थी विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहने हेतु प्रेरित हों।
- यदि अनुपस्थित विद्यार्थी विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहना आरंभ करते हैं, तो अध्यापकों को सबके सामने उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। नियमित उपस्थिति वाले छात्रों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र दें। छात्रों को उनकी उपलब्धियों के लिए प्रोत्साहित करें।
- विद्यार्थियों में स्वयं पढ़ने एवं सीखने की आदत को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालय की सुविधा को और ज्यादा गंभीरता से लिया जाए , क्योंकि यह विद्यार्थियों में जिज्ञासा और समस्याओं को स्वयं सुलझाने की भावना को विकसित करती है।

विद्यालय प्रशासकों को, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में, शैक्षिक कार्यक्रमों के विकास और कार्यान्वयन में अध्यापकों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इससे समाज में शिक्षा के प्रति एक प्रभावी एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है ।

विद्यालयों और विद्यार्थी नामांकन में भारी वृद्धि के बावजूद, प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण अभी भी एक सपना बना हुआ है। अधिकांश विद्यार्थी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही विद्यालय छोड़ देते हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में अभी और सुधार एवं परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रशासन और सरकार को ऐसे संस्थानों की योजना बनानी चाहिए जो न केवल विद्यार्थियों की बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों की जरूरतों और मांगों को भी पूरा कर सकें। इन सिफारिशों को लागू करके विद्यार्थियों की उपस्थिति दर में सुधार लाया जा सकता है और उनकी शिक्षा को अधिक प्रभावी और सफल बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची (References):

एएसईआर (2018)| *एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट (रूरल)*, जनवरी 15, 2019 |

बाला,एम. (2022)| *एब्सेंटिज्म अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू सर्टेन पर्सनल फैमिली एंड स्कूल रिलेटेड वैरियेबल्स* | डिपार्टमेंट ऑफ़ एजूकेशन एंड कम्युनिटी सर्विस, पंजाब यूनिवर्सिटी |

बलकिस, एम., एवं अन्य. (2016) | द स्कूल एब्सेंटिज्म अमंग हाई स्कूल स्टूडेंट्स: कंट्रीब्यूटिंग फैक्टर्स | *एजुकेशनल साइंस : थ्योरी एंड प्रैक्टिस, 16*, 5-17 |

बेस्ट, जे. डब्लू. एण्ड अट. ऑल. (2017) | रिसर्च इन एजुकेशन, *पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विस, नॉएडा, उत्तर प्रदेश*|

बुज़ाइ, सी., एवं अन्य. (2021)| स्कूल एलियनेशन एंड एकेडमिक अचीवमेंट: द रोल ऑफ़ लर्नड हेल्पलेस्सनेस एंड मासटेरी ओरिएंटेशन | *स्कूल साइकोलॉजी, 36*(1), 17-23 |

गुप्ता, एस०पी० एवं गुप्ता, अलका (2018)| व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ, *इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन*|

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (2020) | *एमएचआरडी* https://www.education.gov.in

नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन (1986) | *एमएचआरडी* https://www.education.gov.in

प्रथम (2016) | एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजूकेशन रिपोर्ट (रूरल)| *न्यू दिल्ली: प्रथम*|

प्रथम (2018)| एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजूकेशन रिपोर्ट (रूरल) | *न्यू दिल्ली: प्रथम*|

सिंह, ए०के० (2018)| मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, *मोतीलाल बनारसी दास, पटना*|

ज़ोडिनसंगा, साइलो (2014)| ए स्टडी ऑफ़ अब्सेंटिज्म अमंग टीचर्स एंड स्टूडेंट्स इन एलिमेंट्री स्कूल्स इन आइजोल डिस्ट्रिक्ट, *डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन, मिजोरम यूनिवर्सिटी, आइजोल*|

करलिंगर, एफ०एन० (2016)| फाउण्डेशन्स ऑफ विहैबिरियल रिसर्च (दूसरा संस्करण), *सुरजीत पब्लिकेशन्स, दिल्ली 5*|

खातून. आर. (2003)| ए स्टडी का स्टूडेंटस अब्सेंटिज्म इन द एलीमेंट्री स्कूल्स ऑफ ईस्टर्न यू पी एंड इट्स रिलेशन टू सोसिओइकोनोंमिक एंड फैमिली फ़ैक्टर्स | *अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन*|

मोहलिक, आर., एवं सेठी, आर. (2021)| लो अटेंडेंस ऑफ़ स्टूडेंट इन गवर्नमेंट एलिमेंट्री स्कूल ऑफ़ झारखंड, *ए स्टडी : भुवनेश्वर रीजनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन*|

मंगल, एस. के. (2019)| एडवान्स एजुकेशनल सायकोलॉजी (दूसरा संस्करण), *पी०एच०आई० लर्निंग प्रा०लि०, नई दिल्ली*|

सिमुफोरोसा, एम. एवं रोज़मेरी, एन. (2016)| स्कूल नॉन अटेंडेंस: ए स्टडी ऑफ इट्स कॉजेज अमंग हाई स्कूल स्टूडेंटस इन मशविंगो डिस्ट्रिक्ट सेकेंडरी स्कूल, *जिंबॉब्वे. जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज रिसर्च, 1* (2), 27-48 |

ताम्बेकर, डी. एच., एवं शिरसत एस.डी. (2014)| मिनिमाइजेशन ऑफ़ इलनेस अब्सेंटिज्म इन प्राइमरी स्कूल स्टूडेंटस यूजिंग लो-कॉस्ट हाइजीन इंटरवेंशन | *द ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ हेल्थ एंड एलाइड साइंसेस, 11*(2), 7 |